॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी थीं प्रायः ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या क्षेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ ऐसे हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भर सक तो पूरे ग्रंथ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व-साधारन के उपकारक पद चुन लिये हैं, कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फुट-नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा गया है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उन के संक्षेप वृत्तांत और कौतुक फुट-नोट में लिख दिये गये हैं।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिस से वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत ख़र्च होता है तौ भी सर्व-साधारन के उपकार हेतु दाम आध आना फ़ी आठ पृष्ठ (रायल) से अधिक नहीं रक्खा गया है।

प्रोप्रैटर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

नवंबर १९१४ ई०

इलाहाबाद।

॥ सूचीपत्र ॥

अ

इ

ऐ

क

च

ज

पृष्ठ

ह

साखी

जीवन-चरित्र
महात्मा दूलनदास जी का

महात्मा दूलनदास जी के जीवन का प्रमाणिक वृत्तान्त भी कितने ही प्रसिद्ध साधोँ और भक्तोँ की भाँति नहीँ मिलता। यह जगजीवन साहिब के गुरुमुख चेले थे जो थोड़े बरस अट्ठारहवेँ शतक विक्रमीय के पिछले भाग मेँ और विशेष काल तक उन्नीसवेँ शतक के अगले भाग मेँ वर्त्तमान थे।

यह जाति के सोम-बंशी ठाकुर थे जिनका जन्म समेसी गाँव ज़िला लखनऊ मेँ एक ज़मींदार के घर हुआ। जगजीवन साहिब से मौज़ा सरदहा मेँ उपदेश लेने पर यह बहुत काल तक उन के संग कोटवा मेँ रहे फिर ज़िला रायबरैली मेँ धर्म्मे नाम का एक गाँव बसाया जहाँ आकर विश्राम किया और बहुत काल तक परमार्थ का सदाव्रत बाँट कर चोला छोड़ा।

इन के चमत्कार की कथाओँ मेँ एक कथा यह प्रसिद्ध है कि बाराबंकी के उमापुर गाँव मेँ एक साधू नेवलदासजी बिराजते थे जिन के पास एक मुसलमान फ़क़ीर रहा करता था। एक दिन नेवलदासजी ने उस फ़क़ीर से कहा कि तेरे जीवन का काग़ज़ फटाही चाहता है दस दिन और रह गये हैँ। यह सुन कर फ़क़ीर ने सोचा कि इसी मीआद मेँ जगजीवन साहिब की चौदहो गद्दियोँ और चारो पायोँ का दर्शन करलूँ, सो सिवाय महात्मा दूलनदास जी के पाये के, सब गद्दियोँ और तीन पायोँ के दर्शन किये तो सब ने नेवलदास जी साधू के वचन को सकारा, पर जब वह महात्मा दूलनदास जी के पास नवेँ दिन पहुँचा और हाल कह कर भभूत माँगी तो महात्माजी बोले कि नेवलदास ने मिथ्या नहीँ कहा था परंतु काग़ज़ तेरे "जीवन" का नहीँ फटा है बरन तेरे दरिद्र का। फिर उसकी प्रार्थना पर उसे दूसरे दिन तक अपने चरनोँ मेँ रहने की आज्ञा दी। जब मरने का दिन बीत गया तो वह फ़क़ीर खुश खुश

नेवलदास साधू के पास गया और अपना वृत्तान्त कहा जिस पर वह साधू हँस कर बोला कि दूलन दफ़्तर का मालिक है अपने सामर्थ से तेरे जीवन के काग़ज़ की जगह तेरे दरिद्र का काग़ज़ फाड़ दिया अब जा कर निःशंक भजन में लग।

दूलनदास जी गृहस्थ आश्रम ही में रहे, ज़ाहिर में ज़मींदारी के काम को नहीं छोड़ा और यही मर्य्यादा जगजीवन साहिब के समस्त गद्दियों और पायों की है।

दूलनदास जी के पदों और साखियों के हम कई बरस से खोज में थे और कोटवा के गुरुधाम से बहुत जतन करके मँगाना चाहा परंतु न मिले। थोड़े दिन हुए राजा पृथ्वीपाल सिंह साहिब रईस ज़िला बारावंकी ने कृपा करके थोड़े से पद भेजे फिर ठाकुर गंगा बख़्श सिंह जी ज़मींदार मौज़ा टँडवा ज़िला फ़ैज़ाबाद ने विशेष शब्द अनुग्रह करके भेजे और कुछ और इधर उधर से इकट्ठा करके यह पुस्तक छापी जाती है। इन दोनों महाशयों को हम हृदय से धन्यवाद देते हैं॥

इलाहाबाद,
अगहन, सम्वत १९७१

अधम,
एडिटर, संतबानी पुस्तक-माला।

दूलनदास जी

की

बानी

नाम महिमा ।

॥ शब्द १ ॥

नाम सुमिरु मन मुरुख अनारी ।
छिन छिन आयू घटत जातु है, समुझि गहहु सत डोरि सँभारी ॥१
यह जीवन सुपने को लेखा, का भूलसि झूठी संसारी ।
अंत काल कोइ काम न अइहै, मातु पिता सुत बंधू नारी ॥२॥
दिवस चारि को जगत सगाई, आखिर नाम सनेह करारी ॥
रसना सत्त नाम रटि लावहु, उघरि जाइ तोरि कपट किवारी ॥३॥
नाम कि डोरि पोढ़ि धरनी धरु, उलटि पवन चढ़ु गगन अटारी ।
तहँ सत साहिब अलख रूप वै, जन दूलन करु दरस दिदारी ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

मन सत्य नाम रट लाउ रे ॥ टेक ॥
राति भाति रहु नाम रसायन, अवर सबहिँ बिसराउ रे ॥१॥
त्रिकुटी तिरथ प्रेम जल पूरन, तहाँ सुरति अन्हवाउ रे ॥२॥
करि अस्नान होहु तुम निर्मल, दुरमति दूरि बहाउ रे ॥३॥
दूलनदास सनेह डोरि गहि, सुरति चरन लपटाउ रे ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

कोइ बिरला यहि बिधि नाम कहै ॥ टेक ॥
मंत्र अमोल नाम दुइ अच्छर, बिनु रसना रट लागि रहै ॥१॥
होठ न डोलै जीभ न बोलै, सूरत धरनि दिढ़ाइ गहै ॥२॥
दिन औ राति रहै सुधि लागी, यह माला यह सुमिरन है ॥३॥
जन दूलन सत गुरन बताया, ता की नाव पार निबहै ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

रहु मन नाम की डोरि सँभारे।
धृग जीवन नर नाम भजन बिनु, सब गुन वृथा तुम्हारे ॥१॥
पाँच पचीसा के मद माते, निस दिन साँझ सकारे।
बंदी-छोर नाम सुमिरन बिनु, जन्म पदारथ हारे ॥२॥
अजहुँ चेत करु हेत नाम तेँ, गज गनिका जिन्ह तारे।
चाखि नाम रस मस्त मगन ह्वै, बैठहु गगन दुवारे ॥३॥
यहि कलि काल उपाइ अवर नहिं, बनि है नाम पुकारे।
जगजीवन साइँ के चरनन, लागे दास दुलारे ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

यह नइया डगमगि नाम बिना। लाइ ले सत्त नाम रटना ॥१॥
इत उत भौजल अगम बना। अहै जरूर पार तरना ॥२॥
मैं निगुनी गुन एकौ नाहीं। माँझ धार नहिं कोउ अपना ॥३॥
दिहेउँ सीस सतगुरु चरना। नाम अधार है दुलन जना ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

रहु तोइँ राम राम रट लाई।
जाइ रटहु तुम नाम अच्छर दुइ, जौनी बिधि रटि जाई ॥१॥
राम राम तुम रटहु निरंतर, खोजु न जतन उपाई।
जानि परत मोहिं भजन पंथ की, यहै अरूझनि भाई ॥२॥

वालमीकि उलटा जप कीन्हेउ, भयौ सिद्ध सिधि पाई ।
सुवा पढ़ावत गनिका तारी, देखु नाम प्रभुताई ॥३॥
दूलनदास तू राम नाम रटु, सकल सबै बिसराई ।
सतगुरु साईं जगजीवन के, रहु चरनन लपटाई ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

बाजत नाम नौबति आजु ।
है सावधान सुचित्त सीतल, सुनहु गैब अवाजु ॥१॥
सुख कंद अनहद नाद धुनि सुनि, दुख दुरित[1] क्रम भ्रम भाजु ।
सत लोक बरसो पानि धुनि, निर्बान यहि मन बाजु ॥२॥
तोइँ चेतु चित दै प्रेम मगन, अनंद आरति साजु ।
घर राम आये जानि, भइनि[2] सनाथ बहुरा[3] राजु ॥३॥
जगजिवन सतगुरु कृपा पूरन, सुफल भे जन काजु ।
धनि भाग दूलन दास तेरे, भक्ति तिलक बिराजु ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

मन वहि नाम की धुनि लाउ ।
रटु निरंतर नाम केवल, अवर सब बिसराउ ॥ १ ॥
साधि सूरत आपनो, करि सुवा[4] सिखर[5] चढ़ाउ ।
पोषि प्रेम प्रतीत तेँ, कहि राम नाम पढ़ाउ ॥ २ ॥
नामही अनुरागु निसु दिन, नाम के गुन गाउ ।
बनी तैा का अबहिँ, आगे और बनी बनाउ ॥ ३ ॥
जगजिवन सतगुरु बचन साचे, साच मन माँ लाउ ।
करु बास दूलनदास सत माँ, फिरि न यहि जग आउ ॥४॥

---

(१) दूर हुए, भागे । (२) हुई । (३) पलटा, लौटा । (४) तोता । (५) पहाड़ की चोटी ।

॥ शब्द ९ ॥

जब गज अरध नाम गुहरायो ।
जब लगि आवै दूसर अच्छर, तब लगि आपुहि धायो ॥१॥
पाँय पियादे भे करुनामय, गरुड़ासन बिसरायो ।
धाय गजंद गोद प्रभु लीन्हो, आपनि भक्ति दिढ़ायो ॥२॥
मीरा को बिष अमृत कीन्हो, बिमल सुजस जग छायो ।
नामदेव हित कारन प्रभु तुम, मिर्तक गाय जियायो ॥३॥
भक्त हेत तुम जुग जुग जनमेउ, तुमहिं सदा यह भायो ।
बलि बलि दूलनदास नाम की, नामहि ते चित लायो ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

द्रुपदी राम कृस्न कहि टेरी ।
सुनत द्वारिका तें उठि धायो, जानि आपनी चेरी ॥१॥
रही लाज पछितात दुसासन, अंबर[1] लाग्यो ढेरी ।
हरि लीला अवलोकि चकित चित, सकल सभा भुइँ हेरी[2] ॥२
हरि रखवार सामरथ जा के, मूल अचल तेहि केरी ।
कबहुँ न लागति ताति बाव तेहि, फिरत सुदरसन[3] फेरी ॥३
अब मोहिं आसा नाम सरन की, सीस चरन दियो तेरी ।
दूलनदास के साईं जगजीवन, इतनी बिनती मेरी ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

भजहु नाम मोरि लगन सुधारन,
पूरन ब्रह्म अखिल[4] जग कारन ॥ १ ॥
अर्ध नाम की सुरति करत मन,
करुना-कंद[5] गजंद-उबारन ॥ २ ॥
लाउ जिक्रिर[6] मन फिकिरि फरक करु ।
नाम सदा जन संकट टारन ॥३॥

---

(१) बस्त्र। (२) ज़मीन की ओर देखना सोच का निशान है। (३) विश्नु का शस्त्र। (४) पूर्ण। (५) दया के मूल। (६) सुमिरन।

द्रुपदी लज्या के रखवारे,
जन प्रह्लाद कि पैज सँभारन[1] ॥ ४ ॥
होहु निडर मन सुमिरि नाम अस,
सर्म रु कर्म कुअंक भिजारन[2] ॥ ५ ॥
दूलनदास के साईं जगजीवन,
दिहिन नाम आवागवन निवारन ॥ ६ ॥

॥ शब्द १२ ॥

रसना राम नाम न लिया ।
मनहिं ज्ञान विचार गुरु के, चरन सीस न दिया ॥१॥
रक्त पानि समोइ कै, जिन्ह अजब जामा सिया ।
तेहि बिसारि गँवार काहे, रखत पाहन[3] हिया ॥२॥
अहो अंध अचेत मुग्धा, समुझि काम न किया ।
अछत[4] नाम पियूष[5] पासहिं, मोह माहुर[6] पिया ॥३॥
गयो गर्भ बिनास काहे न, कौल कारन जिया ।
दूलन हरि की भक्ति बिनु, यह जिन्दगानी छिया ॥४॥

भेद का अंग ।

॥ शब्द १ ॥

साईं तेरो गुप्त मर्म हम जानी ।
कस करि कहौं बखानी ॥ टेक ॥
सतगुरु संत भेद मोहिं दीन्हा, जग से राखा छानी ।
निज घर का कोउ खोज न कीन्हा, करम भरम अटकानी ॥१

---

(१) प्रह्लाद भक्त के राम नाम की टेक या प्रण को सँभालने वाले । (२) खोटे श्रम (क्रिया) और कर्म के अंक को मेटने वाले । (३) पत्थर या मूरत पत्थर की। (४) आछत=मौजूद होते । (५) अमृत । (६) विष ।

निज घर है वह अगम अपारा, जहाँ बिराजै स्वामी ।
ता के परे अलोक अनामी, जा का रूप न नामी ॥२॥
ब्रम्ह रूप धरि सृष्टि उपाई, आप रहा अलगानी ।
बेद कितेब की रचन रचाई, दस औतार धरानी ॥ ३ ॥
निज माता सीता सोइ राधा, निज पितु राम सुवामी ।
दोउ मिलि जीवन बंद छुड़ाया, निज पद मैं दिया ठामी ॥४
दूलनदास के साईं जगजीवन, निज सुत जक्त पठानी ।
मुक्ति द्वार की कूँची दीन्ही, ता तेँ कुलुफ[1] खुलानी ॥५॥

॥ दोहा ॥

दूलन यह मत गुप्त है, प्रगट न करो बखान ।
ऐसे राखु छिपाय मन, जस बिधवा औधान[2] ॥

॥ शब्द २ ॥

देख आयोँ मैं ते। साईं की सेजरिया ।
साईं की सेजरिया सतगुरु की डगरिया ॥ १ ॥
सबदहि ताला सबदहि कुंजी, सबद की लगी है जँजिरिया॥२
सबद ओढ़ना सबद बिछौना, सबद की चटक चुनरिया ॥३
सबद सरूपी स्वामी आप बिराजैं, सीस चरन मैं धरिया ॥४
दूलनदास भजु साईं जगजीवन, अगिन से अहँग उजरिया॥५

चितावनी

॥ शब्द १ ॥

पछितात क्या दिन जात बीते, समुझ करु नर चेत रे ।
अंध तेरे कंध सिर पर, काल डंका देत रे ॥ १ ॥
हुसियार ह्वै गुन गाव प्रभु के, ठाढ़ रहु गुरु खेत रे ।
ताके रहै छूटै नहीं, जिमि राहु रबि ससि केत रे ॥२॥

---

(१) ताला । (२) गर्भ, हमल ।

जम द्वार तर सब पीसिगे, चर अचर निन्दक जेत रे ।
नहिं पियत अमृत नाम रस, भरि स्वास सुरत सचेत रे ॥३
मद मोह महुवा दाख दुख, बिष का पियाला लेत रे ।
जग नात गोत बिसारि सब, हर दम गुरू से हेत रे ॥ ४॥
सगलौ सुपन अपना वही, जिस रोज परत सँकेत रे ।
वह आइ सिरजनहार हरि, सतनाम भो जल सेत रे ।
जन दुलन सतगुरु चरन वंदत, प्रेम प्रीति समेत रे ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

तू काहे को जग में आया, जो पै नाम से प्रीति न लाया रे ॥ टेक
तृष्ना काम सवाद घनेरे, मन से नहिँ बिसराया ।
भोग बिलास आस निस बासर, इत उत चित भरमाया रे ॥१
त्रिकुटी तिरथ प्रेम जल निर्मल, सुरत नहीं अन्हवाया ।
दुर्मति करम मैल सब मन के, सुमिरि सुमिरि न छुड़ाया रे ॥२
कहँ से आये कहँ को जैहे, अंत खोज नहिँ पाया ।
उपजि उपजि के बिनसि गये सब, काल सबै जग खाया रे ३
कर सतसंग आपने अंतर, तजि तन मोह औ माया ।
जन दूलन बलि बलि सतगुरु के, जिन मोहिँ अलख लखाया रे ॥४

उपदेश का अंग ।

॥ शब्द १ ॥

बोल मनुआँ राम राम ॥ टेक ॥
सत्त जपना और सुपना, जिक्र लावो अष्ट जाम ॥ १ ॥
समुझि बूझि बिचारि देखो, पिंड पिँजरा धूम धाम ॥ २ ॥
बालमीकि हवाल पूछो, जपत उलटा सिद्ध काम ॥ ३ ॥
दास दूलन आस प्रभु की, मुक्ति-करता सत्त नाम ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

राम नाम दुइ अच्छरै, रटै निरंतर कोय ।
दूलन दीपक बरि उठै, मन प्रतीति जो होय ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

जागु जागु आतमा, पुरान दाग धोउ रे ।
कर्म भर्म दूर करु, कीच काम खोउ रे ॥ १ ॥
अपनी सुधि भूलि गई, और की क्या टोउ रे ।
सत्त बात झूठ करै, झूठ ही को गोउ[1] रे ॥ २ ॥
इहै बात जानि जानि, द्वार द्वार रोउ रे ।
सत्तर पानी साबुन का, प्रेम पानो भोउ[2] रे ॥ ३ ॥
लाग दाग धोय डारु, वाह वाह होउ रे ।
दूलन बेकूफ काम, गाफिल ह्वै न सोउ रे ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

मन तुम रहो चरनन लगे ।
बिनु चरन कँवल सनेह, अवर बिधान सब डगमगे ॥ १ ॥
सब देँह धरि धरि गये मरि मरि, जीव बिरले जगे ।
नर जनम उत्तम पाइ, चरन सनेह बिन सब ठगे ॥ २ ॥
का अन्न तजि पय पिये, का भुज दंड दँही दगे ।
का तजे घर घरनी[3], जो चरन सनेह नाम न रँगे ॥ ३ ॥
जन दुलन सतगुरु चरन जानहु, हित सनेही सगे ।
धरि ध्यान लै सत सुरति संगम, रहहु छबि रस पगे ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

चलो चढ़ो मन यार महल अपने ॥ टेक ॥
चौक चाँदनी तारे झलकैं, बरनत बनत न जात गने ॥ १ ॥
हीरा रतन जड़ाव जड़े जहँ, मोतिन कोटि कितान बने ॥ २

(१) छिपा कर रखना, पकड़े रहना । (२) थोड़े पानी से भिँगाना । (३) स्त्री ।

सुखमन पलँगा सहज बिछौना, सुख सोवो को करै मने[1] ॥३॥
दूलनदास के साईं जगजीवन, को आवै यह जगसुपने ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

जोगी चेत नगर मैं रहो रे ॥ टेक ॥
प्रेम रंग रस ओढ़ चदरिया, मन तसबीह[2] गहो रे ॥१॥
अन्तर लाओ नामहि की धुनि, करम भरम सब धो रे ॥२॥
सूरत साधि गहो सत मारग, भेद न प्रगट कहो रे ॥३॥
दूलनदास के साईं जगजीवन, भवजल पार करो रे ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

अइलेहु यहि देसवाँ, मनुवाँ कै मइल धुवैतेहु ।
सतगुरु घाट काया कै सौंदन, नाम साबुन लपटैतेहु ॥१॥
धोये मलहिं मिटै कस कलिमल, दुबिधा दूरि बहैतेहु ।
ज्ञान बिचार ताहि करि धोवी, प्रेम कै पाट बनैतेहु ॥२॥
स्वारथ छाड़ि नाम आसा धरि, बिषय बिकार बहैतेहु ।
भ्रम तजि अगुन सगुन करि मन तैं, भवसागर तरि जैतेहु ॥३
सुत तिय परिवारहिं अरु धन तजि, इनके बस न भुलैतेहु ।
अनमिलना मिलना काहू से, हित अनहित न चिन्हैतेहु ॥४
चौरासी चित मोह बिसरतेहु, हरि पद नेह लगैतेहु ।
दूलनदास बंदगी गावै, बिना परिस्रम जैतेहु ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

अब काहे भूलहु हो भाई, तूँ तो सतगुरु सबद समझलेहु ॥ टेक
ना प्रभु मिलिहै जोग जाप तैं, ना पथरा के पूजे ।
ना प्रभु मिलिहै पउआँ पखारे, ना काया के भूँजे ॥ १ ॥

---

(१) कौन बरज सकता है। (२) माला।

दया धरम हिरदे मैं राखहु, घर मैं रहहु उदासी ।
आन के जिव आपन करि जानहु, तब मिलिहै अबिनासी ॥ २ ॥
पढ़ि पढ़ि के पंडित सब थाके, मुलना पढ़ै कुराना ।
भस्म रमाइ के जोगिया भूले, उनहूँ मरम न जाना ॥ ३ ॥
जोग जाप तहिया से छाड़ल, छाड़ल तिरथ नहाना ।
दूलनदास बंदगी गावै, है यह पद निर्बाना ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

प्रानी जपि ले तू सतनाम ॥ टेक ॥
मात पिता सुत कुटुम कबीला, यह नहिं आवैं काम ।
सब अपने स्वारथ के संगी, संग न चलै छदाम ॥ १ ॥
देना लेना जो कुछ होवै, करिले अपना काम ।
आगे हाट बजार न पावै, कोइ नहिं पावै ग्राम ॥ २ ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह ने, आन बिछाया दाम[1] ।
क्यौं मतवारा भया बावरे, भजन करो निःकाम ॥ ३ ॥
यह नर देही हाथ न आवै, चल तू अपने धाम ।
अब की चूक माफ नहिं होगी, दूलन अचल मुकाम ॥ ४ ॥

॥ शब्द ९ ॥

जो कोइ भक्ति किया चहे भाई ॥ टेक ॥
करि बैराग भसम करि गोला, सो तन मनहिं चढ़ाई ॥ १ ॥
ओढ़ि के बैठ अधिनता चादर, तज अभिमान बड़ाई ॥ २ ॥
प्रेम प्रतीत धरै इक तागा, सो रहै सुरत लगाई ॥ ३ ॥
गगन मँडल बिच अभरन[2] झलकत, क्यौं न सुरत मंन लाई ४
सेस सहस मुख निसु दिन बरनत, बेद कोटि गुन गाई ॥ ५ ॥
सिव सनकादि आदि ब्रम्हादिक, ढूँढ़त थाह न पाई ॥ ६ ॥

---

(१) जाल । (२) भूषन, जवाहिर ।

नानक नाम कबीर मता है, सो मोहिं प्रगट जनाई ॥ ७ ॥
ध्रुव प्रह्लाद यही रस माते, सिव रहे ताड़ी लाई ॥ ८ ॥
गुरु की सेवा साध की संगत, निसु दिन बढ़त सवाई ॥ ९ ॥
दूलनदास नाम भज बन्दे, ठाढ़ काल पछिताई ॥ १० ॥

॥ शब्द १० ॥

जग में जै दिन है जिंदगानी ॥ टेक ॥
लाइ लेव चित गुरु के चरनन, आलस करहु न प्रानी ॥ १ ॥
या देही का कौन भरोसा, उभसा[1] भाठा[2] पानी ॥ २ ॥
उपजत मिटत बार नहिं लागत, क्या मगरूर गुमानी ॥ ३ ॥
यह तो है करता की कुदरत, नाम तू ले पहिचानी ॥ ४ ॥
आज भलो भजने को औसर, काल की काहु न जानी ॥ ५ ॥
काहु के हाथ साथ कछु नाहीं, दुनियाँ है हैरानी ॥ ६ ॥
दुलनदास बिस्वास भजन करु, यहि है नाम निसानी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ११ ॥

तैं राम राम भजु राम रे, राम गरीब निवाज हो ॥ टेक ॥
राम कहे सुख पाइहो, सुफल होइ सब काज ।
परम सनेही राम जी, रामहिं जन की लाज हो ॥ १ ॥
जनम दीन्ह है राम जी, राम करत प्रतिपाल ।
राम राम रट लाव रे, रामहिं दीनदयाल हो ॥ २ ॥
मात पिता गुरु राम जी, रामहिं जिन बिसराव ।
रहो भरोसे राम के, तैं रामहिं से चित चाव हो ॥ ३ ॥
घर बन निसु दिन राम जी, भक्तन के रखवार ।
दुखिया दूलनदास को रे, राम लगइहैं पार हो ॥ ४ ॥

---

(१) चढ़ा । (२) घटा ।

॥ शब्द १२ ॥

राम राम रटु राम राम सुनु, मनुवाँ सुवा सलोना रे ॥टेक॥
तन हरियाले बदन[1] सुलाले, बोल अमोल सुहौना रे ॥१॥
सत्त तंत्र अरु सिद्ध मंत्र पढ़ु, सोई मृतक जियौना रे ॥२॥
सुबचन तेरे भौजल बेरे,[2] आवागवन मिटौना रे ॥३॥
दुलनदास के साईं जगजीवन, चरन सनेह दृढ़ौना रे ॥४॥

॥ शब्द १३ ॥

मन राम भजन रहु राजी रे ॥ टेक ॥
दुनियाँ दौलत काम न अइहै, मति भूलहु गज बाजी[3] रे॥१
निसु दिन लगन लगी भगवानहिँ, काह करै जम पाजी रे॥२
तन मन मगन रहौ सिधि साधो, अमर लोक सुधि साजी रे॥३
दुलनदास के साईं जगजीवन, हरि भक्ती कहि गाजी रे॥४

॥ शब्द १४ ॥

मन रहि जा चरनन सीस धरी, लागि रहै धुनि हरी हरी ॥१
तोहि समझावौं घरी घरी, कुमति बिपति तोरि जाइ टरी॥२
पाँच पचीसौ एक करी, पियहु दरस रस पेट भरी ॥ ३ ॥
हारे बहुत बहुत रबरी[4], चरन प्रीति बिन कछु न सरी ॥४॥
चरन प्रभाव जानु कुबरी[5], परसत गौतम नारि तरी[6] ॥५॥
साईं जगजीवन कृपा करी, जन दूलन परतीत परी ॥६॥

॥ शब्द १५ ॥

भजन करु संसै ना करु रे ॥ टेक ॥
सबद बिचारि खोजि ले मारग, चित तेँ चेतहु वोहु घरु रे॥१
साईं मनसा फल के दाता, दृढ़ बिस्वास हृदय धरु रे ॥२॥

---

(१) चिहरा। (२) बेड़ा, नाव। (३) हाथी घोड़ा। (४) थक कर। (५) कुबजा जिस की पीठ का कूब श्रीकृष्ण ने अपने चरण से सीधा किया। (६) गौतम की नारी अहिल्या जो सराप बस शिला बनी पड़ी थी और श्रीरामचंद्र के चरण लगाने से तरी।

अपने अंतर अंबर[1] डोरी, गहु तोहि काहुहिं ना डरु रे ॥३॥
दुलनदास के साईं जगजीवन, अब दै सीस चरन परु रे ॥४॥

बिनय का अंग

॥ शब्द १ ॥

साईं हो गरीब निवाज ॥ टेक ॥
देखि तुम्हैं घिन लागत नाहीं, अपने सेवक कै साज ॥१॥
मोहिं अस निलज न यहि जग कोऊ, तुम ऐसे प्रभु लाज जहाज॥२॥
और कछू हम चाहित नाहीं, तुम्हरे नाम चरन तें काज ॥३॥
दूलनदास गरीब निवाजहु, साईं जगजीवन महराज ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

साईं दरस माँगैाँ तोर, आपनो जन जानि साईं मान राखहु मोर ॥१॥
अपथ[2] पंथ न सूझि इत उत, प्रबल पाँचो चोर ।
भजन केहि बिधि करौं साईं, चलत नाहीं जोर ॥ २ ॥
नात लाइ दुरात[3] काहे, पतित जन की दौर ।
बचन अवधि[4] अधार मेरे, आसरा नहिं और ॥ ३ ॥
हेरिये करि कृपा जन तन, ललित[5] लोचन कोर ।
दास दूलन सरन आयो, राम बंदी-छोर ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

साईं तेरे कारन नैना भये बैरागी ।
तेरा सत दरसन चहौं, कछु और न माँगी ॥ १ ॥
निसु बासर तेरे नाम की, अंतर धुनि जागी ।
फेरत हौं माला मनौं, अँसुवन झरि लागी ॥ २ ॥

---

(१) आकाश । (२) कुराह । (३) हटाते हो । (४) प्रतिज्ञा । (५) सुंदर, मोहनी ।

पलक तजी इत उक्ति तेँ,[1] मन माया त्यागी ।
दृष्टि सदा सत सनमुखी, दरसन अनुरागी ॥ ३ ॥
मदमाते राते मनौं, दाधे बिरह आगी ।
मिलु प्रभु दूलन दास के, करु परम सुभागी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सुनहु दयाल मोहिँ अपनावहु ॥ टेक ॥
जन मन लगन सुधारन साईं, मोरि बनै जो तुमहिँ बनावहु१
इत उत चित्त न जाइ हमारा, सूरत चरन कमल लपटावहु ॥२॥
तबहूँ अब मैँ दास तुम्हारा, अब जिनिं बिसरौ जिनि बिसरावहु ॥३॥
दुलनदास के साईं जगजीवन, हमहूँ काँ भक्तन माँ लावहु॥४

॥ शब्द ५ ॥

साईँ सुनहु बिनती मोरि ॥ टेक ॥
बुधि बल सकल उपाय-हीन मैँ, पाँयन परौँ दोऊ कर जोरि१
इत उत कतहूँ जाइ न मनुवाँ, लागि रहै चरनन माँ डोरि॥२
राखहु दासहिँ पास आपने, कस को सकिहै तोरि ॥३॥
आपन जानि कै मेटहु मेरे, औगुन सब क्रम भ्रम खोरि[2] ।४॥
केवल एक हितू तुम मेरे, दुनियाँ भरी लाख करोरि ॥५॥
दुलनदास के साईं जगजीवन, माँगौँ सत दरस निहोरि॥६॥

॥ शब्द ६ ॥

साईँ भजन ना करि जाइ ।
पाँच तसकर संग लागे, मोहिँ हटकत[3] धाइ ॥ १ ॥
चहत मन सतसंग करनो, अधर बैठि न पाइ ।
चढ़त उतरत रहत छिन छिन, नाहिँ तहँ ठहराइ ॥२॥
क़ठिन फाँसी अहै जग की, लियो सबहि बझाइ ।

(१) इधर अर्थात संसार की चतुरता (उक्ति) की ओर से आँख मूँद ली। (२) सराप (शाप), कसर। (३) रोकते हैं।

पास मन मनि नैन निकटहिँ, सत्य गयो भुलाइ ॥ ३ ॥
जगजिवन सतगुरु करहु दाया, चरन मन लपटाइ ।
दास दूलन बास सत माँ, सुरत नहिँ अलगाइ ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

साईं तेरो भजन ना हम जाना, ता तेँ बार बार पछिताना ॥टेक॥
भजन करंते दास मलूका, नाम भजन जिन्ह जाना ।
दीनदयाल भक्तहितकारी, लैहै। रे परवाना ॥ १ ॥
गोपी ग्वाल भजन कहि गोकुल, सुरपति इन्द्र रिसाना ।
दीनदयाल सरन की लज्या, छत्र गोवर्धन ताना ॥२[१]॥
कुतबदीन भजि भयो औलिया, औ मनसूर दिवाना ।
तेरे नाम भजन के कारन, बलख तजा सुलताना ॥३॥
भजन बखानत सुनत सबद, इक भइ अवाज असमाना ।
दूलनदास भजन करि निर्भय, रहु चरनन लपटाना ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

प्रभु तुम किहेउ कृपा बरियाईं[२] ।
तुम कृपाल मैं कृपा अलायक[३], समुझि निवजतेहु साईं ॥१॥
कूकुर धोये होइ न बाछा[४], तजै न नीच निचाई ।
बगुला होइ न मानस-बासी[५], बसहि जे बिषै तलाई ॥२॥
प्रभु सुभाउ अनुहारि चाहिये, पाय चरन सेवकाई[६] ।
गिरगिट पौरुष करै कहाँ लगि, दैारि कँड़ौरे[७] जाई ॥ ३ ॥

---

(१) जब गोकुल के बासियोँ ने इन्द्र की पुरातन पूजा श्रीकृष्ण के उपदेश से छोड़ कर कृष्ण को पूजा तो इन्द्र ने कोप करके मेघ को आज्ञा की कि घोर वर्षा करके गोकुल को जड़ से बहा दो उस समय ब्रजवासियोँ ने श्रीकृष्ण को टेरा जिन्होँ ने गोवर्द्धन पहाड़ को उँगली पर उठा कर छाया करली और ब्रज को बचा लिया। (२) ज़बरदस्ती। (३) नालायक़। (४) गऊ का बच्चा। (५) मान सरोवरबासी। (६) ईश्वर सरीखा स्वभाव बन जाय तब उसके चरनोँ मेँ बासा मिले। (७) कंडा या उपले का ढेर—मसल है "गिरगिटे कै दौड़ कँड़ौरे लै"।

अब नहिं बनत बनाये मेरे, कहत अहौं गुहराई ।
दुलनदास के साईं जगजीवन, समरथ लेहु बनाई ॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

काह कहौं कछु कहि नहिं आवै ॥ टेक ॥
गुन बिहीन मैं बौरी बिचारी, पिय गुन देय तौ पिय गुन गावै ॥१॥
काहु क राखि लीन्ह चरनन तर, काहू को इत उत भरमावै॥२
भाग सुहाग हाथ उनहीं के, रोये कोऊ राज न पावै ॥३॥
दुलनदास के साईं जगजीवन, बिनती करि जन तुम्हैं सुनावै४

॥ शब्द १० ॥

राम तोरी माया नाचु नचावै ।
निसुबासर मेरो मनुआँ व्याकुल, सुमिरन सुधि नहिं आवै॥१
जोरत तूरै[1] नेह सूत मेरो, निरवारत अरुझावै ।
केहि बिधि भजन करौं मोरे साहिब, बरबस मोहिं सतावै॥२
सत सन्मुख थिर रहे न पावै, इत उत चितहिं डुलावै ।
आरत[2] पवरि[3] पुकारौं साहिब, जन फिरियादिहिं[4] पावै॥३
थाकेउँ जन्म जन्म के नाचत, अब मोहिं नाच न भावै ।
दुलनदास के गुरु दयाल तुम, किरपाहिं तैं बनि आवै ॥४॥

प्रेम का अंग ।

॥ शब्द १ ॥

धन मोरि आज सुहागिन घड़िया ॥ टेक ॥
आज मोरे अँगना सन्त चलि आये, कौन करौं मिहमनिया१
निहुरि निहुरि मैं अँगना बुहारौं, मातो मैं प्रेम लहरिया ॥२

---

(१) तोड़े । (२) दीन आधीन । (३) द्वारे पर । (४) नालिश की सुनवाई ।

भाव के भात प्रेम कै फुलका, ज्ञान को दाल उतरिया ॥३
दुलनदास के साईं जगजीवन, गुरु के चरन बलिहरिया ॥४

॥ शब्द २ ॥

जागु री मोरि सुरत पियारी ।
चरन कमल छवि झलक निहारी ॥ १ ॥
बिसरि जाइ दे यह संसारी ।
धरहु ध्यान मन ज्ञान विचारी ॥ २ ॥
पाँच पचीसो दे झझकारी[1] ।
गहहु नाम की डोरि सँभारी ॥ ३ ॥
साईं जगजीवन अरज हमारी ।
दूलनदास को आस तुम्हारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

सतनाम तें लागी अँखिया, मन परिगै जिकिर[2] जँजीर हो १
सखि नैना बरजे ना रहैं, अब ठिरे[3] जात वोहि तीर[4] हो ॥२
नाम सनेही बावरे, दृग भरि भरि आवत नीर हो ॥३॥
रस-मतवाले रस-मसे[5], यहि लागी लगन गँभीर हो ॥४॥
सखि इस्क पिया से आसिकाँ, तजि दुनिया दौलत भीर[6] हो५
सखि गोपीचन्दा भरथरी, सुलताना भयो फकीर हो ॥६
सखि दूलन का से कहै, यह अटपटि[7] प्रेम की पीर हो ॥७

॥ शब्द ४ ॥

रट लागि हिये रमई रमई ॥ टेक ॥
गुरु अंतर डोरी पोढ़ि दई ।
नित बाढ़न लागी प्रीति नई ॥ १ ॥

---

(१) फटकार या डाँट । (२) स्मरण या सुमिरन । (३) विशेष शीतलता से जम जाने को "ठिरना" कहते हैं–प्रतिलिपि में "टरे" है जिसके अर्थ खिँचने के हैं । (४) पास । (५) रस में पगे । (६) प्रेमी जन जिन की प्रीति प्रीतम से लगी है उन्हें संसार और धन माल की चिन्ता नहीं रहती । (७) अड़बड़, अनोखी ।

जनि मानै वैर बिरोध कोई ।
जग माँ जिंदगानी है थोरई[१] ॥ ३ ॥
दुनियाँ दुचिताई भूलि गई ।
हम समुझि गरीबी राह लई ॥ ४ ॥
चरनाँ रज अंजन नैन दई ।
जन दूलन देखत राम-मई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

पिया मिलन कब होइ, अँदेसवा लागि रही ॥ टेक ॥
जब लग तेल दिया मैं बाती, सूझ पड़ै सब कोइ ।
जरिगा तेल निपटि गइ बाती, लै चलु लै चलु होइ ॥१॥
बिन गुरु मारग कौन बतावै, करिये कौन उपाय ।
बिना गुरू के माला फेरै, जनम अकारथ जाय ॥२॥
सब संतन मिलि इक मत कीजै, चलिये पिय के देस ।
पिया मिलैं तो बड़े भाग से, नहिं तो कठिन कलेस ॥३॥
या जग ढूढ़ूँ वा जग ढूढ़ूँ, पाऊँ अपने पास ।
सब संतन के चरन बन्दगी, गावै दूलनदास ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

हुआ है मस्त मंसूरा, चढ़ा सूली न छोड़ा हक़ ।
पुकारा इश्क़बाज़ों को, अहै मरना यही बरहक़ ॥१॥
जो बोले आशिक़ाँ याराँ, हमारे दिल मैं है जो शक ।
अहै यह काम सूरों का, लगाये पीर से अब तक ॥२॥
शम्सतबरेज़ की सीफ़त, जहाँ मैं ज़ाहिरा अब तक ।
निज़ामुद्दीन सुल्ताना, सभी मेटे दुनो के धक ॥३॥

---

(१) थोड़ीही ।

निरख रहे नूर अल्लह का, रहे जीते रहे जब तक।
हुआ हाफ़िज़ दिवाना भी, भये ऐसे नहीं हर यक ॥४॥
सुना है इश्क़ मजनूँ का, लगी लैला कि रहती झक[1]।
जलाकर ख़ाक तन कीना, हुए वह भी उसी माफ़िक़ ॥५॥
दुलन जन को दिया मुरशिद, पियाला नाम का थकथक[2]।
वही है शाह जगजीवन, चमकता देखिये लक़ लक़[3] ॥६॥

॥ शब्द ७ ॥

अब तो अफ़सोस मिटा दिल का, दिलदार दीद मैं आया है।
संतौं की सुहबत मैं रह कर, हक़ हादी को सिर नाया है ॥१
उपदेश उग्र गहि सत्त नाम, सोइ अष्ट जाम धुनि लाया है।
मुरशिद की मेहर हुई यौं कर, मज़बूत जोश उपजाया है ॥२
हर वक़्त तसौवर मैं सूरत, मूरत अंदर झलकाया है।
बूअली क़लंदर औ फ़रीद, तबरेज़ वही मत गाया है ॥३
कर सिद्क़ सबूरी लामकान, अल्लाह अलख दरसाया है।
लखि जन दूलन जगजिवन पीर, महबूब मेरे मन भाया है॥
ख़ाविन्द ख़ास ग़ैबी हुज़ूर, वह दिल अंदर मैं आया है ॥४

॥ शब्द ८ ॥

ऐसा रँग रँगैहौं, मैं तो मतवालिन होइहौं ॥ टेक ॥
भट्ठी अधर लगाइ, नाम की सोज[4] जगैहौं।
पौन सँभारि उलटि दै झौंका, करकट कुमति जलैहौं ॥१॥
गुरुमति लहन[5] सुरति भरि गागरि, नरिया नेह लगैहौं।
प्रेम नीर दै प्रीति पुचारी, यहि बिधि मदवा चुवैहौं ॥२॥

---

(१) जोश। (२) लबालब भरा हुआ। (३) नूरानी; चमचम। (४) सोज़=तपन, विरह। (५) जामन जिस से शराब का ख़मीर जल्द उठ आता है।

अमल अगारी नाम खुमारी, नैनन छबि निरतैहौं ।
दै चित चरन भयूँ संत सन्मुख, बहुरि न यहि जग ऐहौं॥३॥
ह्वै रस मगन पियौं भर प्याला, माला नाम डोलैहौं ।
कह दूलन सतसाईं जगजीवन, पिउ मिलि प्यारी कहैहौं ॥४

करुणा का अंग ।

॥ शब्द १ ॥

हमारे तो केवल नाम अधार ।
पूरन काम नाम दुइ अच्छर, अंतर लागि रहै खुटकार ॥१
दासन पास बसै निसु बासर, सोवत जागत कबहुँ न न्यार ।
अरध नाम टेरत प्रभु धाये, आय तुरत गज गाढ़ निवार ॥२
जन मन-रंजन सब दुख-भंजन, सदा सहाय परम हित प्यार।
नाम पुकारत चीर बढ़ायो, द्रुपदी लज्या के रखवार ॥३
गौरि गणेस रु सेस रटत जेहिं, नारद सुक[1] सनकादि पुकार ।
चारहु मुख जेहिं रटत बिधाता[2], मंत्र राज सिव मन सिंगार४

॥ शब्द २ ॥

भक्तन नाम चरन धुनि लाई ॥ टेक ॥
चारिहु जुग गोहारि प्रभु लागे, जब दासन गोहराई ॥१॥
हिरनाकुस रावन अभिमानी, छिन माँ खाक मिलाई ॥२॥
अबिचल भक्ति नाम की महिमा, कोऊ न सकत मिटाई ॥३॥
कोउ उसवास[3] न एकौ मानहु, दिन दिन की दिनताई ॥४॥
दुलनदास के साईं जगजीवन, है सतनाम दुहाई ॥ ५ ॥

---

(१) सुकदेव । (२) ब्रह्मा । (३) संसय ।

बिबेक ज्ञान।

कहत सो अहैाँ पुकारी । सुनि साधो लेहु बिचारी ॥ १ ॥
सबद कहै परमाना । जिन्ह प्रतीत मन आना ॥ २ ॥
सबद कहै सो करई । बिन बूझे भ्रम माँ परई ॥ ३ ॥
सबद कहै बिस्तारा । सबदै सब घट उजियारा ॥ ४ ॥
सबद बूझि जेहि आई । सहजे माँ तिनहीं पाई ॥ ५ ॥
सहज समान न आना । सहजे मिलि कृपानिधाना ॥ ६ ॥
सहज भजन जो करई । सो भवसागर तरई ॥ ७ ॥
भवसागर अपरम्पारा । सूझत वार न पारा ॥ ८ ॥
रहै चरन सरनाई । तब भवसागर तरि जाई ॥ ९ ॥
भवसागर तरि पारा । तब भयो सबन तेँ न्यारा ॥१०॥
ह्वै न्यारा गुन गावै । तेहि गति कोउ न पावै ॥ ११ ॥
पदुम[1] पात्र ज्योँ नीरा । अस मन रहै तेहि तीरा ॥१२॥
मगन भयो मस्ताना । सो साधू भे निरबाना ॥ १३ ॥
अब कछु कहा न जाई । कलि देखि कै कहैाँ सुनाई ॥१४
बहु प्रपंच अधिकारा । जग जानि करत अपकारा ॥१५॥
असुभ कर्म सब करहीं । ते जाइ नर्क माँ परहीं ॥ १६ ॥
साध कि निंद्या करहीं । सो कबहूँ नहिं निस्तरहीं ॥१७
सत सबद कहत है बानी । सुखित जन अस्तुति आनी ॥१८॥
जिन्ह दियो संत काँ माथा । तेहि कीन्हेउ राम सनाथा ॥१९
सो नाहीं दुख पावै । जो सीस संत काँ नावै ॥ २० ॥
पंडित की पँडिताई । अब तिन्ह की कहैाँ सुनाई ॥२१॥
बेद ग्रंथ पढ़ि भूले । मैं त्वैं करिकै फूले ॥ २२ ॥

---

(१) कँवल ।

पंडित भला निमाना[1] । जिन्ह राम नाम पहिचाना ॥२३
कलिजुग के कबि ज्ञानी । कथहीं बहुत बखानी ॥ २४ ॥
मनमत ज्ञान कथाहीं । मन भजन करत है नाहीं ॥२५॥
जे रहहिँ नाम तेँ लीना । से ज्ञानी परवीना ॥ २६ ॥
से आहै सत ज्ञानी । जेहि सुरत चरन लपटानी ॥२७॥
सत्य ज्ञान तत सारा । जिन्ह के है नाम अधारा ॥ २८ ॥
भेष बहुत अधिकारी । मैं तिन्ह की कहैाँ पुकारी ॥ २९ ॥
भसम केस बहु भेसा । ते भ्रमत फिरहिँ चहुँ देसा ॥३०॥
बहु गुमान अहंकारी । इन्ह डारेउ सकल बिसारी ॥३१
बहुत फिरहिँ गाफिलाई[2] । करि आसा अरुझाई ॥ ३२ ॥
केहू तपस्या ठाना । कोइ नगन भयो निर्बाना ॥ ३३ ॥
कोइ तीरथ बहुत अन्हाई । कोइ कंद मूरि खनि[3] खाई ॥३४
केहु करि घीँचहिँ तूरा[4] । केहु सतगुरु मिल्यो न पूरा ॥३५॥
झूलै मुख अगिनि झकाही । कोइ ठाढ़े बैठे नाहीं ॥३६॥
भूले करि देखी देखा । है न्यारा नाम अलेखा ॥ ३७ ॥
कोटि तिरथ यह काया । तेहि अंत न केहू पाया ॥ ३८॥
पाँचैा जिन्ह घट जानी । जन दूलन से निरबानी ॥३९॥
राम अच्छर जेहि माहीं । जग तेहि समान कोउ नाहीं ॥४०॥

झूलना ।

(१)

पंखा चँवर मुरछल ढुरैँ, सूआ सबै खिजमति करैँ ।
जरबफ़ का तंबू तन्यो, बैठक बन्यो मसनंद का ॥

---

(१) दीन, उत्तम । (२) ग़ाफ़िल । (३) खोद कर । (४) पद्मासन बैठकर छाती मेँ चिवुक लगाना ।

दिन राति झाँगरि बाजती, सुथरी सहेली नाचती।
पिलसूज[1] आगे योँ जलै, उजियार मानो चंद का॥
एकै अतर चोवा चमेली, बेला खुसबोई लिये।
एकै कटोरे में किये, सरबत सलोना कंद का॥
हिन्दू तुरुक दुइ दीन आलम, आपनी ताबीन[2] में।
यह भी न दूलन खूबहै, करु ध्यान दसरथ-नंद का॥

(२)

बर[3] जे अठारह बरन में, बितपन्य[4] हैं ब्याकरन में।
पहिरे खराऊँ चरन में, जानैं न स्वाद सरीर का॥
कुस मुद्रिका कर राखते, जे देव-बानी भाखते।
नहिँ अन्न आमिष[5] चाखते, नित पान करते छीर का॥
धोती उपरना अंग में, रत वेद विद्या रंग में।
विद्यारथी बहु संग में, जिन्ह बास तीरथ-तीर का॥
सूतहिँ सदा भुइँ सेज जे, पूरे तपस्या तेज के।
यह भी न दूलन खूब है, करु ध्यान श्री रघुबीर का॥

(३)

राखे जटा जिन्ह माथ में, बीभूति लाये गात में।
तिरसूल तोँबी हाथ में, छोड़ेउ सकल सुख धाम का॥
भावै जहाँ जावैं तहाँ, पुर बीच में आवैं नहीं।
रुद्राच्छ का माला गरे, आला बिछावन चाम का॥
दसहूँ दिसा जिन्ह घूमि कै, कीन्हेउ प्रदच्छिन[6] भूमि कै।
फिरि मैान होइ बैठेउ तज्यो, मजकूर दैालति दाम का[7]॥

(१) पतील-सोज़ यानी चैामुखी दीवट। (२) तावेदारी। (३) श्रेष्ठ। (४) प्रवीन, कुशल। (५) माँस। (६) फेरी। (७) फिर मैान (चुप) साध कर बैठे और धन दैालत की चर्चा छोड़ दी।

करि जोग देहौं जारते, हरतार पारा मारते ।
यह भी न झूलन खूब है, करु ध्यान स्यामा स्याम का ॥

(४)

देखे जे साहूकार हैं, करते सकल बैपार हैं ।
पूरा भरा भंडार है, कूबेर के सामान का ॥
सुथरी हवेली यौं बनी, लागी जवाहिर की कनी ।
आकाल छोड़ेउ देस जिन्ह को देखि संपति सान[१] काँ ॥
सारा[२] जिन्हौं की बात का, दरियाव के उस पार लौं ।
सो सक्स[३] है नाहीं कहूँ, जो ना करै परमान काँ ॥
एता बड़ा बिस्तार है, धन का न वारा पार है ।
यह भी न झूलन खूब है, करु ध्यान श्री भगवान का ॥

(५)

ढोलक मजीरा बाजते, तेहि बीच नाउत[४] गाजते ।
संध्या समय तैं भोर लौं, करि जोर झिटकैं माथ काँ ॥
अभुवात[५] हैं अभिमान तैं, बारहिं दिया जो पानि तैं[६] ।
करि कोप मारैं बान तैं, बैताल भाजे साथ का ॥
करि आस आलम सेवता, बिस्वास कारे देव[७] का ।
सो धन्य मानै आप काँ, बीरा जो पावै हाथ का ॥
संसार की जादू पढ़ै, मरजाद जाही से बढ़ै ।
यह भी न झूलन खूब है, करु ध्यान श्री रघुनाथ का ॥

---

(१) शान=महिमा, प्रताप । (२) साख । (३) आदमी । (४) ओझाइत । (५) सिर हिलाते हैं जैसे भूत सिर पर आया हो । (६) ऐसी महिमा है कि उन का दीया तेल की जगह पानी से बलता है । (७) ओझाइत काले देव की पूजा कराते हैं और उस पर सूअर का बच्चा और शराब चढ़वाते हैं ।

फुटकल ।

॥ शब्द १ ॥

साहिब अपने पास हो, कोइ दरद सुनावे ॥ टेक ॥
साहिब जल थल घट घट व्यापत, धरती पवन अकास हो १
नीची अटरिया की ऊँची दुवरिया, दियना बरत अकास हो२
सखिया इक पैठी जल भीतर, रटत पियास पियास हो ॥३
मुख नहिं पिये चिरुआ नहिं पीयै, नैनन पियत हुलास हो४
साईं सरवर[1] साईं जगजीवन[2], चरनन दूलनदास हो ॥५

॥ शब्द २ ॥

भजन करना है कर्रा काम ॥ टेक ॥
मोही भूले मोह के बस मैं, क्रोधी भूले पड़ि हंकार ॥१॥
कामी भूले काम अगिन मैं, लोभी भूले जोरत दाम ॥२॥
जोगी भूले जोग जुगत मैं, पंडित भूले पढ़त पुरान ॥३॥
दूलनदास ओही जन तरिगे, आठ पहर जिन सुमिरा नाम४

॥ शब्द ३ ॥

सुरत बौरी कातै निरमल ताग ॥ टेक ॥
तन का चरखा नाम का टेकुआ, प्रेम की पिउनी करि अनुराग१
सतगुरु धोबी अलख जुलाहा, मलि मलि धोवैं करम के दाग२
इतना पहिरि मन मानिक साजो, पिय अपने पर सबै सिंगार३
दूलनदास अचल गुरु साहिब, गुरु के चरन पर मनुआँ लाग४

॥ शब्द ४ ॥

जोगी जोग जुगत नहिं जाना ॥ टेक ॥
गेरू घोरि रँगि कपरा जोगी, मन न रँगे गुरु ज्ञाना ॥१॥
पढ़हु न सत्त नाम दुइ अच्छर, सीखहु सो सकल सयाना

(१) तालाब, अधिष्ठाता । (२) जगत का आधार ।

साची प्रीति हृदय बिनु उपजे, कहुँ रीझत भगवाना ॥३॥
दूलनदास के साईं जगजीवन, मो मन दरस दिवाना ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

सुमिरौं मैं रामदूत हनुमान ।
समरथ लायक जन सुख-दायक, कर मुसकिल औसान[१] ॥१॥
सील सुजस बल तेज अमित[२] जाके, छवि गुन ज्ञान निधान[३]।
भक्ति तिलक जा के सीस बिराजत, बाजत नाम निसान॥२
जो कछु मो मन सोच होत तब, धरौं तुम्हारो ध्यान ।
तब तुम निकटहिं अहो सहायक, कहँ लगि करौं बखान ॥३
रहौं असंक भरोसे तुम्हारे, निसु दिन साँझ बिहान ।
दूलन दास के परम हितू तुम, पवन-तनय[४] बलवान ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

इस नगरी हम अमल न पाया ॥ टेक ॥
साहिब भेजा नाम तसीलन[५], एको फौज न संग पठाया ।
आइ पड़े इस कठिन देस मैं, लूटन को सब मोहिं तकाया॥१॥
राजा तीन मनासिब[६] भारी, पाँच गढ़ी मजबूत बनाया ।
तिस मैं बसते दस भट[७] भारी, तिन यह मुलुक जगीरिन्ह खाया२
अस सुबिस्त[८] जब कतहुँ न देखा, धाय के सतगुरु सरन मैं आया
दीन जानि गुरु पाछे राखा, लड़ने की मोहिं जुगत बताया ३
दीन्हो तोप सलाखा[९] भारी, ज्ञान के गोला बरूत भराया ।
सुरत पलीता डारि के मारा, टूटी गढ़ी फौज बिचलाया ॥४
फौजदार मनुआँ है बैठा, जब थिर भये तो पकरि बुलाया ।
पाँच पचीसो को बस करि के, नाम तसील खजाने आया॥५

---

(१) सहज । (२) बेहद । (३) ख़ज़ाना । (४) पवन के पुत्र अर्थात हनुमान । (५) तहसील करने । (६) अधिकारी । (७) योधा । (८) सुबीता । (९) तोप भरने का गज़ ।

साहिब पूर दीन दुनिया के, खबर पाय मोहिं बेग बुलाया ।
दुलनदास के साइँ जगजीवन, रीझि के भक्ति दिलन [illegible]

॥ शब्द ७ ॥

नीक न लागे बिनु भजन सिंगरवा ॥ टेक ॥
का कहि आयौ हियाँ करत्यो नाहीं, भूलि गयल तोरा कौल करवा ॥१॥
साचा रँग हिये उपजत नाहीं, भेष बनाय रँग लीन्हो कपरवा ॥२॥
बिन रे भजन तोरी ई गति होइ है, बांधल जैहै जम के दुअरवा ॥३॥
दुलनदास के साइँ जगजीवन, हरि के चरन पर लागि लिलरवा ॥४॥

(१) हिमायत ।

॥ साखी ॥

गुरु महिमा ।

गुरु ब्रह्मा गुरु बिस्नु हैं, गुरु संकर गुरु साध ।
दूलन गुरु गोविन्द भजु, गुरुमत अगम अगाध ॥ १ ॥
ब्रह्मा बिस्नु ता पर ढुरें[1], ढुरो भवानी ईस ।
दूलनदास दयाल गुरु, हाथ दीन्ह जेहिं सीस ॥ २ ॥
पति सनमुख सो पतिब्रता, रन सनमुख सो सूर ।
दूलन सत सनमुख सदा, गुरुमुख गनी[2] सो पूर ॥ ३ ॥
सतगुरु साहिब जगजिवन, इच्छा फल के दानि ।
राखहु दूलनदास की, सुरत चरन लपटानि ॥ ४ ॥
दूलन दुइ कर जोरि कै, याँचै सतगुरु दानि ।
राखहु सुरति हमारि दिढ़, चरन कँवल लपटानि ॥ ५ ॥
श्रीसतगुरु मुख चंद्र तेँ, सबद सुधा झरि लागि ।
हृदय सरोवर राखु भरि, दूलन जागे भागि ॥ ६ ॥
सतगुरु तो मन माँ अहैं, जो मन लागै साथ ।
दूलन चरन कमल गहि, दिहे रहो दिढ़ माथ ॥ ७ ॥
दुइ पहिया के रथ चढ़ेउँ, गुरू सारथी मोर ।
दूलन खेलत प्रेम पथ, आड़ि जक्त की झोर[3] ॥ ८ ॥
दूलन गुरु तेँ बिषै बस, कपट करहिं जे लोग ।
निर्फल तिन की सेव है, निर्फल तिन का जोग ॥ ९ ॥
छठवाँ माया चक्र सोइ, अरुझनि गगन दुवार ।
दूलन बिन सतगुरु मिले, बेधि जाय के पार ॥ १० ॥

---

(१) अनुकूल हाेँ । (२) धनी, बेपरवाह । (३) झकझाेर ।

नाम महिमा ।

दुलनदास जिन के हृदय, नाम बास जो आय ।
अष्ट सिद्धि नौ निद्धि बिचारी, ताहि छाड़ि कहँ जाय ॥१॥
गावै सूरत सुन्दरी, बैठी सत अस्थान ।
जन दूलन मन मोहिनी, नाम सुरंगी तान ॥ २ ॥
दूलन यहि जग जनमि कै, हर दम रटना नाम ।
केवल नाम सनेह बिनु, जन्म समूह[1] हराम ॥ ३ ॥
स्वास पलक माँ नाम भजु, वृथा स्वास जिनि खोउ ।
दूलन ऐसी स्वास से, आवन होउ न होउ ॥ ४ ॥
स्वास पलक माँ जातु है, पलकहिँ माँ फिरि आउ ।
दूलन ऐसी स्वास से, सुमिरि सुमिरि रट लाउ ॥ ५ ॥
डौंडी[2] वाजै नाम की, बरन भेष की नाहिँ ।
दूलनदास विचारि अस, नाम रटहु मन माहिँ ॥ ६ ॥
रसना रटि जेहि लागिगे, चाखि भयो मस्तान ।
दूलन पायो परम पद, निरखि भयो निर्बान ॥ ७ ॥
पैठेउँ मन होइ मरजिया, ढूँढ़ेउँ दिल दरियाउ ।
दूलन नाम रतन्न काँ, भागन कोउ जन पाउ ॥ ८ ॥
सुनत चिकार पिपील की, ताहि रटहु मन माहिँ ।
दुलनदास बिस्वास भजु, साहिब बहिरा नाहिँ ॥ ९ ॥
चितवन नीची ऊँच मन, नामहिँ जिकिर लगाय ।
दूलन सूझै परम पद, अंधकार मिटि जाय ॥ १० ॥

(१) समस्त । (२) ढिँढोरा ।

दूलन चाख्यो नाम रस, विधि सिव मन आधार ।
जन्म जन्म जेहि अमल को, लागी रहै खुमार ॥ ११ ॥
ताति बाउ लागै नहीं, आठौ पहर अनंद ।
दूलन नाम सनेह तें, दिन दिन दसा दुचंद ॥ १२ ॥
दूलन केवल नाम धुनि, हृदय निरंतर ठानु ।
लागत लागत लागिहै, जानत जानत जानु ॥ १३ ॥
दूलन केवल नाम लै, तिन भेंटेउ जगदीस ।
तन मन छाकेउ दरस रस, थाकेउ पाँच पचीस ॥ १४ ॥
सीतल हृदय सुचित्त होइ, तजि कुतर्क कुविचार ।
दूलन चरनन परि रहै, नाम कि करत पुकार ॥ १५ ॥
कर्मन दृष्टि मलीन भे, मैं तैं परिगा फेरु ।
दूलन साईं फेरि मिलु, नाम निरंतर टेरु ॥ १६ ॥
गुरू वचन बिसरै नहीं, कबहुँ न टूटै डोरि ।
पियत रहै सहजै दुलन, नाम रसायन घोरि ॥ १७ ॥
दुलन नाम पारस परसि, भयो लोह तें सोन ।
कुन्दन होइ कि रेसमी, बहुरि न लोहा होन ॥ १८ ॥
दुलन भरोसे नाम के, तन तकिया धरि धीर ।
रहै गरीब अतीम[1] होइ, तिन काँ कही फकीर ॥ १९ ॥
अंध कूप संसार तें, सूरत आनहु फेरि ।
चरन सरन बैठारि कै, दुलन नाम रहु टेरि ॥ २० ॥
तबही सत सुधि बुद्धि सब, सुभ गुन सकल सलूक ।
दूलन जो सत नाम तें, लाउ नेह निस्तूक[2] ॥ २१ ॥

---

(१) जिसके मा बाप मर गये हैं । (२) पक्के तौर पर, निश्चय करके ।

अरुझि अरुझि टूटी जुरत, निगुनी पाउ सलूक[1]।
दूलन ऐसे नाम तेँ, लाउ नेह निस्तूक ॥ २२ ॥
रटत कटत अघ क्रम फटत, भ्रम तम मिटु सब चूक।
दूलन ऐसे नाम तेँ, लाउ नेह निस्तूक ॥ २३ ॥
अन्ध तकत बहिरे सुनत, धुनत बेद को मूक[2]।
दूलन ऐसे नाम तेँ, लाउ नेह निस्तूक ॥ २४ ॥
बिपति सनेही मीत सो, नीति सनेही राउ।
दूलन नाम सनेह दृढ़, सोई भक्त कहाउ ॥ २५ ॥
सुरपति नरपति नागपति, तीनिउँ तिलक लिलार।
दूलन नाम सनेह बिनु, धृग जीवन संसार ॥ २६ ॥
यहि कलि काल कुचाल तकि, आयो भागि डेराइ।
दूलन चरनन परि रहे, नाम की रटनि लगाइ ॥ २७ ॥
दूलन नाम रस चाखि सोइ, पुष्ट पुरुष परवीन।
जिन के नाम हृदय नहीं, भये ते हिजरा हीन ॥ २८ ॥
मरने की डेर छोड़ि कै, नाम भजो मन माहिँ।
दूलन यहि जग जनमि कै, कोउ अमर है नाहिँ ॥ २९ ॥
नामी लोग सबै बड़े, काको कहिये छोट।
सब हित दूलनदास जिन, लीन्ह नाम की ओट ॥ ३० ॥
दूलन चरनन सीस दै, नाम रटहु मन माहँ।
सदा सर्वदा जनम भरि, जा तेँ खैर सलाह ॥ ३१ ॥
राम पुकारत राम जी, लागहिँ भक्त गुहारि।
दूलन नाम सनेह की, गहि रहु डोरि सँभारि ॥ ३२ ॥

---

(१) सत्कार। (२) बहिरे।

दुलन नाम आसा सदा, जगत आस दियो त्यागि ।
छूटै कैसे राम जी, हम तें तुम तें लागि ॥ ३३ ॥
कृपा कंठ उर बैठि कै, त्रिकुटी चिता बनाय ।
नाम अछर दुइ रगरि कै, पावक लेहु जगाय ॥ ३४ ॥
नाम अछर दुइ रटहु मन, करि चरनन तर बास ।
जन दूलन लौलीन रहु, कबहुँ न होहु उदास ॥ ३५ ॥
राम नाम दुइ अच्छरै, रटै निरंतर कोइ ।
दूलन दीपक बरि उठै, मन परतीत जो होइ ॥ ३६ ॥
नाम हृदय बिनु का कियो, कोटिन कपट कलाम ।
दूलन देखत पास हीं, अंतरजामी राम ॥ ३७ ॥
हम चाकर सतनाम के, भक्ति चाकरी हेत ।
दूलन दाता रामजी, मन इच्छा फल देत ॥ ३८ ॥
तीनिउँ करता लोक के, इहाँ उहाँ के राम ।
दूलन चरनन सीस दै, रटत रहो वह नाम ॥ ३९ ॥
सुरत कलम हिय कागद, मसि करु सहज सनेह ।
दुलनदास बिस्वास करि, राम नाम लिखि लेह ॥ ४० ॥
दूलन दाता रामजी, सब काँ देत अहार ।
कैसे दास बिसारि हैं, आनहु मन इतिबार ॥ ४१ ॥
दुखित बिभीषन जानि कै, दीन्हेउ राज अजीत ।
दूलन कैसे छोड़िये, हरि गाढ़े के मीत ॥ ४२ ॥
पाँडव सुत हित कारने, कियो हुतासन[1] सीत ।
दूलन कैसे छोड़िये, हरि गाढ़े के मीत ॥ ४३ ॥

(१) महाभारत में कथा है कि पाँडवों को अपनी राज गद्दी का काँटा समझ कर दुर्योधन ने धोखा देकर उन्हें उनकी माता कुन्ती सहित वाराणावत नगर

प्रन पालेउ प्रहलाद को, प्रगटेउ प्रेम प्रतीत ।
दूलन कैसे छोड़िये, हरि गाढ़े के मीत ॥ ४४ ॥
जहर पान मीरै कियो, नेकु न लाग्यो तीत ।
दूलन कैसे छोड़िये, हरि गाढ़े के मीत ॥ ४५ ॥
संकठ में साथी भयो, हाथी जानि सभीत ।
दूलन कैसे छोड़िये, हरि गाढ़े के मीत ॥ ४६ ॥
चारा पील पिपील को, जो पहुँचावत रोज ।
दूलन ऐसे नाम की, कीन्ह चाहिये खोज ॥ ४७ ॥
भूप एक भुवनेस्वर, रामचंद्र महराज ।
दूलन और केतानि को, राज तिलक जेहिं छाज ॥ ४८ ॥
इत उत की लज्या तुम्हैं, रामराय सिर मैार ।
दूलन चरनन लगि रहे, राखि भरोसा तोर ॥ ४९ ॥
कबहीं अरबी पारसी, पढ़्यो द्रोपदी जाइ ।
दूलन लज्या रामजी, लीन्हों चीर बढ़ाइ ॥ ५० ॥
कबहिं पराकृत संसकृत, पढ़ि कियो पील पुकारि ।
दूलन लज्या रामजी, लीन्हों ताहि उबारि ॥ ५१ ॥
चहिये सो करि है सरम, साईं तेरे दस्त ।
बाँध्यो चरन सनेह मन, दुलनदास रस मस्त ॥ ५२ ॥

को भेज दिया जहाँ एक महल लाह का अपने मंत्री पुरोचन के द्वारा बनवा रक्खा था इस मतलब से कि उस में पांडवों को टिकावें और जब अवसर मिले आग लगा दें कि वहीं सब जल भुन कर मर जायँ परंतु उन के ईश्वर भक्त चचा विदुरजी को यह बात मालूम हो गई सो उन्हों ने युधिष्ठिर को चेता कर एक सुरंग उस महल में रात को इस तरह की खुदवा दी कि पांडव आप महल में आग लगा कर उस की राह से कुन्ती सहित निकल भागे और दुष्ट पुरोचन उस लाह के मंदिर में जल गया ।

तुला रासि तीनिउँ सदा, जा को मन इक ठौर ।[१]
राम पियारे भक्त सोइ, दूलन के सिर मौर ॥ ५३ ॥
दूलन एक गरीब के, हरि से हितू न और ।
ज्याँ जहाज के काग के, सूझै और न ठौर ॥ ५४ ॥
त्रिभुवन करता रामजी, दास तुम्हार कहाइ ।
तुम्हैं छाड़ि दूलन कहा, केहि काँ याँचन जाइ ॥ ५५ ॥
राम नाम दीपक सिखा, दूलन दिल ठहराय ।
करम विचारे सलभ[२] से, जरहिं उड़ाय उड़ाय ॥ ५६ ॥

शब्द महिमा ।

सूर चन्द नहिं रैन दिन, नहिं तहँ साँझ बिहान ।
उठत सब्द धुनि सुन्य माँ, जन दूलन अस्थान ॥ १ ॥
जगजीवन के चरन मन, जन दूलन आधार ।
निसु दिन बाजे बाँसुरी, सत्य सब्द झनकार ॥ २ ॥
चरचा वाद बिवाद की, संगति दीन्हेउ त्यागि ।
दूलन माते अधर धुनि, भक्ति खुमारो[३] लागि ॥ ३ ॥
कोउ सुनै राग रु रागिनी, कोउ सुनै कथा पुरान ।
जन दूलन अब का सुनै, जिन सुनी मुरलिया तान ॥४॥
सबदै नानक नामदेव, सबदै दास कबीर ।
सबदै दूलन जगजिवन, सबदै गुरु अरु पीर ॥ ५ ॥

---

(१) जिस का मन एक ठौर अर्थात् स्थिर है उस के तराजू की तीनाँ डोरियाँ सदा एक सम और नयी हैं, भाव तिरगुन का वेग नहीं व्यापता । (२) पतंगा । (३) नशा ।

संत मत महिमा ।

दूलन यह मत गुप्त है, प्रगट न करौ बखान ।
ऐसे राखु छिपाइ मन, जस बिधवा औधान[1] ॥ १ ॥
रीझि सबद सो भीँजि रस, मत माते गलतान ।
दूलन भागन भक्त कोइ, ठहराने अस्थान ॥ २ ॥
सूचे सोइ ऊँचे दुहुन, चहुँ दिसि देखि बिचारि ।
दूलन चाखा आइ जिन्ह, यह रस ऊख हमारि ॥ ३ ॥

चितावनी ।

दूलन यह परिवार सब, नदी नाव संजोग ।
उतरि परे जहँ तहँ चले, सबै बटाऊ लोग ॥ १ ॥
दूलन यहि जग आइ के, का को रहा दिमाक[2] ।
चंद रोज को जीवना, आखिर होना खाक ॥ २ ॥
दूलन काया कबर है, कहँ लगि करौँ बखान ।
जीवत मनुआँ मरि रहै, फिरि यहि कबर समान ॥ ३ ॥

उपदेश ।

बंधन सकल छुड़ाइ करि, चित चरनन तेँ बाँधु ।
दुलनदास बिस्वास करि, साईँ काँ औराधु ॥ १ ॥
ज्ञानी जानहिँ ज्ञान बिधि, मैं बालक अज्ञान ।
दूलन भजु बिस्वास मन, धुरपुर बाजु निसान ॥ २ ॥

(१) गर्भ, हमल । (२) दिमाग़=घमंड ।

आपनि सूरति दृढ़ करै, मन मूरति के पास।
राजी रहै रजाइ पर, सोई दूलन दास ॥ ३ ॥
बिह्वल बिकल मलीन मन, डगमग कृत जंजाल।
सब कर ग्रौषधि एक यह, दूलन मिलि रहु हाल ॥ ४ ॥
दूलन चरनन लागि रहु, नाम की करत पुकार।
भक्ति सुधारस पेट भरु, का दहुँ लिखा लिलार ॥ ५ ॥
जग रहु जग तेँ अलग रहु, जोग जुगति की रीति।
दूलन हिरदे नाम तेँ, लाइ रहो दृढ़ प्रीति ॥ ६ ॥

विनय ।

साइँ तेरी सरन हैाँ, अब की मोहिँ निवाज।
दूलन के प्रभु राखिये, यहि बाना की लाज ॥ १ ॥
दूलन दुइ कर जोरि कै, बिनती सुनहु हमारि।
हे सखि मोहिँ बताइ दे, साइँ कै अनुहारि ॥ २ ॥
इत उत की लज्या तुम्हैँ, रामराय सिर मैार।
दूलन चरनन लगि रहे, राखि भरोसा तोर ॥ ३ ॥

प्रेम ।

दूलन सत मनि छबि लहो, निरखि चरन धरि सीस।
लागि प्रेम रस मस्त ह्वै, थाके पाँच पचीस ॥ १ ॥
दुलन कृपा तेँ पाइये, भक्ति न हाँसी ख्याल।
काहू पाई सहज हीँ, कोउ ढूँढ़त फिरत बिहाल ॥ २ ॥

दूलन बिरवा प्रेम को, जामेउ जेहि घट माहिँ।
पाँच पचीसो थकित भे, तेहि तरवर की छाहिँ ॥ ३ ॥
जग्य दान तप तीर्थ ब्रत, धर्म जे दूलनदास।
भक्ति-आसरित तप सबै, भक्ति न केहु की आस ॥ ४ ॥
दुलन तिरथ तप दान तेँ, और पाप मिटि जाइ।
भक्त-द्रोह अघ ना मिटै, करै जे कोटि उपाइ ॥ ५ ॥
पेट ठठावहिँ स्वास गहि, मूँदहिँ दसहुँ दुवार।
दूलन रीझै न प्रेम बिनु, सत्त नाम करतार ॥ ६ ॥
धृग तन धृग मन धृग जनम, धृग जीवन जग माहिँ।
दूलन प्रीति लगाय जिन्ह, और निबाही नाहिँ ॥ ७ ॥
प्रेम पियारे पाहुना, दूलन ढूँढ़त ताहि।
मोल महँग दूलन दरस, भक्त सोई जग माहिँ ॥ ८ ॥
समरथ दूलनदास के, आस तोष[1] तुम राम।
तुम्हरे चरनन सीस दै, रटौँ तुम्हारो नाम ॥ ९ ॥
सरवस दूलनदास के, केवल नाम प्रसाद।
महतत सिधि औ सर्व सुभ, सुफल आदि औलाद ॥१०॥

धीरज।

दूलन सतगुरु मत कहै, धीरज बिना न ज्ञान।
निरफल जोग सँतोष बिन, कहैँ सबद परमान ॥ १ ॥
दूलन धीरज खंभ कहँ, जिकिरि बड़ेरा लाइ।
सूरत डोरी पोढ़ि करि, पाँच पचीस झुलाइ ॥ २ ॥

---

(१) आनंद।

दासातन

सती अगिन की आँच सहि, लोह आँच सहि सूर ।
दूलन सत आँचहि सहै, राम भक्त सो पूर ॥ १ ॥
जथाजोग जस चाहिये, सो तैसै फल देइ ।
दूलन ऐसे राम के, चरन कँवल रहै सेइ ॥ २ ॥

साधु महिमा ।

दुलन साधु सब एक हैं, बाग फूल सम तूल ।
कोइ कुदरती सुबास है, और फूल के फूल ॥ १ ॥
जा दिन संत सताइया, ता छिन उलटि खलक[1] ।
छत्र खसै धरनी धसै, तीनिउँ लोक गरक[2] ॥ २ ॥

फुटकल

भाग बड़े यहि जक्त मा, जेहि के मन वैराग ।
विषय भोग परिहरि दुलन, चरन कमल चित लाग ॥१
दूलन पीतम जेहि चहै, कही सुहागिल ताहि ।
आपन आपन भाग है, साझा काहु क नाहिं ॥ २ ॥
जगत मातु बनिता अहै, बूसी जगत जियाव ।
निंदन जोग न ये दोऊ, कहि दूलन सत भाव ॥ ३ ॥

---

(१) ख़लक़=सृष्टि । (२) डूब जाना ।

बनिता ऐसी द्वै बड़ी, देखा यहि संसार।
दूलन बन्दै दुहुन को, झूठे निंदनहार ॥ ४ ॥
दूलन चोला चाम को, आयो पहिरि जहान।
इहाँ कमाई वसि भयो, सहना औ सुलतान ॥ ५ ॥
दूलन छोटे वे बड़े, मुसलमान का हिन्दु।
भूखे देवैं भोरियाँ[१], सेवैं गुरु गोबिन्दु ॥ ६ ॥
भूँखेहि भोजन दिहे भल, प्यासे दीन्हें पानि।
दूलन आये आदरी[२], कहि सु सब्द सनमान[२] ॥ ७ ॥
काल कर्म की गम नहीं, नहिँ पहुँचै भ्रम बान।
दूलन चरन सरन रहु, छेम कुसल अस्थान ॥ ८ ॥
दूलन यह तन जक्त भा, मन सेवै जगदीस।
जब देख्यो तबही पस्यो, चरनन दीन्हे सीस ॥ ९ ॥
दूलन प्रेम प्रतीत तेँ, जो वंदै हनुमान।
निसु बासर ता की सदा, सब मुसकिल आसान ॥ १० ॥
दुलन चरन चित लाइ कै, अंतर धरै न ध्यान।
निसुवासर बकि बकि मरै, ना मानी सो आन ॥ ११ ॥
दूलन कथा पुरान सुनि, मते न माते लोग।
वृथा जनम रस भोग बिनु, खोया को संजोग ॥ १२ ॥
वेद पुरान कहा कहेउ, कहा किताब कुरान।
पंडित काजी सत्त कहु, दूलन मन परमान ॥ १३ ॥

(१) लिट्टियाँ। (२) आदर या ख़ातिरदारी।

दुलन प्रीत मरजाद हम, देखा यहि संसार ।
धेला छः दमरी हद, पैसा का व्योहार ॥ १४ ॥
कतहुँ प्रगट नैनन निकट, कतहूँ दूरि छिपानि ।
दूलन दीनदयाल ज्यौं, मालव मारू पानि[1] ॥ १५ ॥
दूलन भक्तन के हिसिक, चलै कोऊ संसार ।
भक्तिहीन हिसकन चलै, ता सिर परै खभार[2] ॥ १६ ॥

---

(१) संस्कृत में "मालव" मालवा देश को कहते हैं जहाँ पानी की बहुतायत है, और मारू माड़वार देश का नाम है जहाँ की भूमि बलुई (मरु) है और पानी का अकाल है। (२) ख़राबी।

फ़िहरिस्त छपी हुई पुस्तकों की

पुस्तक	मूल्य
कबीर साहिब का साखी-संग्रह (२१५२ साखियाँ)	॥।)॥
कबीर साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ तीसरा एडिशन	॥)
,, ,, ,, भाग २	॥)
,, ,, ,, भाग ३	।)
,, ,, ,, भाग ४	=)
,, ,, ज्ञान-गुदड़ी रेख़ते और भूलने	।)
,, ,, अखरावती का पूरा ग्रंथ जिस में १७ चौपाई दोहे और सोरठे पहिले छापे से विशेष हैं	-)॥
धनी धरमदास जी की शब्दावली और जीवन-चरित्र	।=)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली मय जीवन-चरित्र भाग १	॥।)
,, ,, ,, भाग २, पद्मसागर ग्रंथ सहित ...	॥।)
,, ,, रत्न सागर मय जीवन-चरित्र ...	॥।=)
,, ,, घट रामायन दो भागों में, मय जीवन-चरित्र भाग १ ...	१)
,, ,, भाग २ ...	१)
गुरु नानक साहिब की प्राण-संगली सटिप्पण, जीवन-चरित्र सहित भाग १ ...	१)
,, ,, ,, ,, भाग २ ...	१)
दादू दयाल की बानी, जीवन-चरित्र सहित, भाग १ (साखी) ...	१-)
,, ,, भाग २ (शब्द)	॥।-)
सुंदर बिलास और सुंदरदास जी का जीवन-चरित्र ...	॥≡)
पलटू साहिब की शब्दावली (कुंडलिया इत्यादि) और जीवन-चरित्र, भाग १	॥)
,, ,, ,, भाग २	।-)॥
जगजीवन साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ ...	॥-)
,, ,, ,, भाग २	॥-)
दूलन दास जी की बानी और जीवन-चरित्र	≡)
चरनदासजी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १	॥)॥
,, ,, भाग २	।≡)॥
ग़रीबदास जी की बानी और जीवन-चरित्र	॥।=)
रैदासजी की बानी और जीवन-चरित्र	।-)॥

दरिया साहिब (बिहार वाले) का दरियासागर और जीवन-चरित्र ...
,, ,, के चुने हुए पद और साखी ...
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र ...
भीखा साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र ... ...
गुलाल साहिब (भीखा साहिब के गुरू) की बानी और जीवन-चरित्र ...
बाबा मलूकदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... ...
गुसाईं तुलसीदासजी की बारहमासी ... ..
यारी साहिब की रत्नावली और जीवन-चरित्र ... ...
बुल्ला साहिब का शब्दसार और जीवन-चरित्र ... ...
केशवदास जी की अमीघूँट और जीवन-चरित्र ... ...
धरनीदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... ...
मीरा बाई की शब्दावली और जीवन-चरित्र (दूसरा एडिशन) ...
सहजो बाई का सहज-प्रकाश जीवन-चरित्र सहित (तीसरा एडिशन विशेष शब्दों के साथ) ...
दया बाई की बानी और जीवन-चरित्र ... ...
अहिल्याबाई का जीवन-चरित्र अँग्रेज़ी पद्य में ... ...
संतबानी संग्रह, भाग १—साखी }
,, ,, भाग २—शब्द } छप रहे हैं

दाम में डाक महसूल व वाल्यू-पेअबल कमिशन शामिल नहीं है वह इस ऊपर लिया जायगा।

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस,
इलाहाबाद।

Printed at The Belvedere Steam Printing Works, Allahabad, by E. Hall.